Skill Development Programme

For Answer Writing

Indian Society (Model Answer)

DATE : 26-April-2018 **TIME : 03:15 pm**

मुख्य परीक्षा

प्रश्न- **''साम्प्रदायिकता 21वीं सदी की प्रमुख सामाजिक बुराइयों में से एक है। भारत में साम्प्रदायिक हिंसा को उत्पन्न और प्रोत्साहन करने में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और प्रशासनिक कारक सामूहिक रूप से जिम्मेदार हैं।'' उपर्युक्त कथन की चर्चा करते हुए भारत में इसके रोकने हेतु प्रयासों को भी स्पष्ट करें। (250 शब्द)**

"Communalism is one among the mojor social evils of 21st century. The social, political, economic and administrative factors are together responsible for the birth and promotion of communalism in India." Discuss above statement and explain the efforts to prevent it in India. (250 Worlds)

MODEL ANSWER

मुख्य बिन्दु

- भूमिका में साम्प्रदायिकता को बताएं।
- अगले पैरा में भारत में साम्प्रदायिकता के दुष्परिणामों को बताएं।
- फिर अगले पैरा में साम्प्रदायिकता को रोकने हेतु प्रयासों को बताएं।
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

उत्तर- धर्म मुख्यत: दो धार्मिक समुदायों का या एक ही धर्म के दो सम्प्रदायों के मध्य धार्मिक आधार पर व्याप्त घृणा, द्वेष और परस्पर अविश्वास के मनोभाव को साम्प्रदायिकता की संज्ञा दी जाती है और इस प्रकार के मनोभाव से उत्पन्न संघर्ष एवं हिंसा को साम्प्रदायिक दंगा/हिंसा कहा जाता है। भारत में साम्प्रदायिक हिंसा के कारकों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक कारक मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं-

- सामाजिक कारकों में सामाजिक परम्पराएं, जाति एवं वर्ग अहम, असमानता और धर्म पर आधारित सामाजिक स्तरीकरण सम्मिलित है।
- राजनीतिक कारकों में धर्म पर आधारित राजनीति, धर्मशासित, धार्मिक संस्थाएं, राजनीतिक हस्तक्षेप साम्प्रदायिक हिंसा का राजनीतिक औचित्य और राजनीतिक नेतृत्व की असफलता सम्मिलित है।
- आर्थिक कारकों में आर्थिक शोषण और पक्षपात, असंतुलित आर्थिक विकास, प्रतिस्पर्धा का बाजार, अप्रसरणशील आर्थिक व्यवस्था, श्रमिकों का विस्थापन और समावेशन तथा गल्फ से आये हुए पैसे का प्रभाव सम्मिलित है।

साम्प्रदायिकता रोकने हेतु उपाए-

1. आधुनिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार कर लोगों की सोच को तार्किक और वैज्ञानिक बनाया जाए।
2. राजनीति में धार्मिक प्रचार-प्रसार को सीमित किया जाए।
3. अल्पसंख्यकों के लिए विशेष योजनाओं का निर्माण कर उसमें व्याप्त गरीबी, अशिक्षा एवं बेरोजगारी को दूर किया जाए।
4. इसे रोकने हेतु स्वयं सहायता समूह, एन.जी.ओ. आदि का सहारा लिया जा सकता है।
5. इससे उत्पन्न सामाजिक कुरीतियों को दूर किया जाना।

* * *